अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : प्रथम– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 07 जनवरी, 2024)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) कौनसी गति के जीवों में हेय, ज्ञेय, उपादेय के बारे में चिन्तन-मनन करने की शक्ति होती है-
(क) मनुष्य गति (ख) देव गति
(ग) तिर्यंच गति (घ) तीनों ही सही (क)

(ii) ग्रहण किये गये विषयों को अच्छा बुरा मानकर उस पर राग-द्वेष करना कहलाता है-
(क) विषय (ख) विकार
(ग) पाप (घ) पुण्य (ख)

(iii) जो ज्ञान-दर्शन आदि पर्यायों में निरन्तर रमण करे, गमन करे, उसे कहते हैं-
(क) साधु (ख) श्रावक
(ग) आत्मा (घ) परमात्मा (ग)

(iv) श्रद्धा के बीच होने वाले विक्षेपों को कहते हैं-
(क) दूषण (ख) भूषण
(ग) आगार (घ) यतना (क)

(v) चारों प्रकार के आहार का त्याग करें, संथारा करे, उसे कहते हैं-
(क) अणागारं (ख) णियटियं
(ग) अइक्कतं (घ) णिरवसेसं (घ)

(vi) निम्न में से कौनसा वाणव्यन्तर देव नहीं है-
(क) भूयवाई (ख) महोरग
(ग) महारौद्र (घ) महाकंदे (ग)

(vii) मनुष्य गति में सबसे कम संज्ञा कौनसी होती है-
(क) आहार संज्ञा (ख) भय संज्ञा
(ग) मैथुन संज्ञा (घ) परिग्रह संज्ञा (ख)

(viii) 'वोदाण' किसका फल है-
(क) अक्रिया का (ख) अनाश्रव का
(ग) तप का (घ) संयम का (ग)

(ix) कितने दण्डक असंयत हैं-
(क) 1 (ख) 2
(ग) 12 (घ) 22 (घ)

(x) समकित के 67 बोल में कौनसा यतना का भेद नहीं है-
(क) वंदना (ख) अनुकम्पा
(ग) गुणग्राम (घ) दान (ख)

(xi) निम्न में से कौनसा आभ्यन्तर तप है-
(क) वैयावृत्य (ख) प्रतिसंलीनता
(ग) कायाक्लेश (घ) रसपरित्याग (क)

(xii) सीला नरक का गौत्र कौनसा है-
(क) रत्नप्रभा (ख) शर्कराप्रभा
(ग) पंकप्रभा (घ) बालुकाप्रभा (घ)

(xiii) आहार संज्ञा किस कर्म के उदय से होती है-
(क) वेदनीय कर्म (ख) मोहनीय कर्म
(ग) अन्तराय कर्म (घ) आयु कर्म (क)

(xiv) कषाय अथवा योग के निमित्त से जीव में होने वाले शुभाशुभ परिणाम को क्या कहते हैं-
(क) समकित (ख) ध्यान
(ग) तप (घ) लेश्या (घ)

(xv) सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण का थोकड़ा किस आगम से लिया गया है-
(क) पन्नवणा सूत्र (ख) भगवती सूत्र
(ग) उपासग दशांग सूत्र (घ) आवश्यक सूत्र (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- 15x1 = (15)

(i) गुण और पर्यायों के समूह को परमाणु नहीं कहते है। (हाँ)

(ii) पदार्थ जिस रूप में हैं, उसे उसी रूप में मानना मिथ्यात्व है। (नहीं)

(iii) 'संयम' का अर्थ कर्मों का नाश करना है। (नहीं)

(iv) 'समकित' धर्म रूपी नींव का प्रासाद है। (नहीं)

(v) भरत क्षेत्र में वर्तमान समय में दो चारित्र ही पाये जाते हैं। (हाँ)

(vi) साधु-साध्वी अपनी शक्ति एवं योग्यता के अनुसार किसी भी भंग से प्रत्याख्यान को ग्रहण कर सकते हैं। (नहीं)

(vii) बिना उपयोग धुन ही धुन में किसी कार्य करने की प्रवृत्ति न होना 'ओघ संज्ञा' है। (नहीं)

(viii) अपने किये हुए शुभाशुभ कर्मों का फल भोगने के स्थान को 'दण्डक' कहते हैं। (हाँ)

(ix) जिसको ऐसा ज्ञान है ये जीव है, ये अजीव है, ये त्रस है, ये स्थावर है तो उसके प्रत्याख्यान दुपच्चक्खाण नहीं है। (हाँ)

(x) 'बेअसान' अद्धा का एक भेद नहीं है। (हाँ)

(xi) जीव अशाश्वत अर्थात् उत्पत्ति और विनाश सहित है। (नहीं)

(xii) आचार्य महाराज की विनय भक्ति करना श्रद्धान नहीं कहलाता है। (हाँ)

(xiii) क्षुधा वेदनीय कर्म के उदय से अहार संज्ञा पैदा होती है। (हाँ)

(xiv) अजीव राशि के 563 एवं जीव राशि के 560 भेद होते हैं। (नहीं)

(xv) स्कन्ध, देश और प्रदेश, ये आकाशास्तिकाय के तीन भेद हैं। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्त स्थान में लिखिए:- 15x1 = (15)

(i)	उपयोग	(क) भय संज्ञा	श्रुत ज्ञान
(ii)	योग	(ख) अवगाहन गुण	व्यवहार मनोयोग
(iii)	अधीरता	(ग) संस्थान	भय संज्ञा
(iv)	विज्ञान	(घ) संवर रहित	हेयोपादेय
(v)	अणागारं	(च) अपूर्वकरण	आगार रहित
(vi)	वृत	(छ) लेश्या	संस्थान
(vii)	शुक्ल	(ज) श्रुतज्ञान	लेश्या
(viii)	मन की एकाग्रता	(झ) जीव शाश्वत	ध्यान
(ix)	असंवृत	(य) हेयोपादेय	संवर रहित
(x)	संवेग	(र) वृतिकान्तार	लक्षण
(xi)	आकाशास्तिकाय	(ल) ध्यान	अवगाहन गुण
(xii)	तिर्यंच पंचेन्द्रिय	(व) व्यवहार मनोयोग	एक दण्डक
(xiii)	द्रव्य की अपेक्षा	(क्ष) लक्षण	जीव शाश्वत
(xiv)	निवृत्ति बादर	(त्र) एक दण्डक	अपूर्वकरण
(xv)	आगार	(ज्ञ) आगार रहित	वृतिकान्तार

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1 = (15)

(i) मैं पच्चक्खाण का फल हूँ। संयम

(ii) मेरा अर्थ पदार्थ के यथार्थ स्वरूप का चिंतन करना है। सत्य मनोयोग

(iii) मैं सुख पाने के लिए व दुःख से बचने के लिए विशेष प्रयत्न कर सकता हूँ। त्रसकाय

(iv) मेरा गुण आकाश में बादलों का मिलना-बिखरना है। पुद्गलास्तिकाय

(v) मैं कभी अजीव नहीं बन सकता और अजीव कभी मैं नहीं बन सकता। जीव

(vi) मैं एक ऐसा चारित्र हूँ,जिसमें नौ मुनि एक साथ आराधना करते हैं। परिहार विशुद्धि

(vii) मेरा अर्थ धार्मिक क्रिया के विषय में फल के प्रति संदेह करना है। वितिगिच्छा

(viii) मैं सर्व उत्तरगुण का ऐसा भेद हूँ, जिसमें जो तप पहले करना था किसी कारण से नहीं हो सका तो पीछे कर सकते हैं। अइक्कतं

(ix) मैं एक ऐसी गति हूँ, जिसमें सबसे कम मैथुन संज्ञा है। नरक गति

(x) मेरा अर्थ जिन प्रवृत्तियों से श्रद्धा में अधिक विशिष्टता आना होता है। भूषण

(xi) मैं एक ऐसा बंध हूँ जिसमें कार्मण पुद्गल आत्मा पर आकर चिपकते हैं, उसकी संख्या ज्ञात होती हैं। प्रदेश बंध

(xii) मेरे सहारे ही जीव जीवित रहता है। प्राण

(xiii) मैं एक ऐसी आत्मा हूँ, जो दसवें गुणस्थान तक के जीवों में रहती हूँ। कषाय आत्मा

(xiv) मेरा कार्य षट्द्रव्यों के उत्पाद, व्यय व ध्रौव्यरूप त्रिपदी का चिंतन करना है। धर्मध्यान

(xv) मैं एक ऐसा महाव्रत हूँ, जिसमें साधु-साध्वी को एक तिनका भी बिना आज्ञा के ग्रहण करना नहीं कल्पता है। अचौर्य /अदत्तादान/चोरी

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2 = (16)

(i) करण का अर्थ लिखिए।

उ. किसी दोष का सेवन स्वयं नहीं करना, दूसरों से नहीं कराना और करने वाले की अनुमोदना नहीं करना।

(ii) प्रभावना की परिभाषा लिखिए।

उ. जैन धर्म की उन्नति एवं प्रचार के लिए प्रयत्न करना प्रभावना है। धर्म की उन्नति करने वाला प्रभावक कहलाता है।

(iii) सुपच्चक्खाण दुपच्चक्खाण के थोकड़े में गौतम स्वामी ने महावीर स्वामी से पहला प्रश्न क्या पूछा?

उ. हे भगवान! कोई कहता है कि मुझे सर्व प्राण, सर्व भूत, सर्व जीव ओर सर्व तत्त्व को मारने का पच्चक्खाण है?

(iv) मोहनीय कर्म की परिभाषा लिखिए।

उ. जिस कर्म के उदय से आत्मा मोहित बनकर स्व और पर का, सत-असत का या हेय, ज्ञेय, उपादेय का भान भूल जाता है, उसे मोहनीय कर्म कहते हैं।

(v) पर्याप्तियाँ कितनी होती हैं ? नाम लिखिए।

पर्याप्तियाँ 6 होती हैं-1. आहार पर्याप्ति, 2. शरीर पर्याप्ति, 3. इन्द्रिय पर्याप्ति, 4.श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, 5. भाषा पर्याप्ति, 6. मन पर्याप्ति

(vi) स्थानक की परिभाषा लिखिए।

धर्म की उत्पत्ति व धर्म में स्थिर होने में सहायक होने वाले स्थान को स्थानक कहते हैं।

(vii) सर्वमूलगुण पच्चक्खाण के भेद लिखिए।

— सर्वमूलगुण पच्चक्खाण के 5 भेद हैं- सर्वथा प्रकार से हिंसा, झूठ, चोरी, मैथुन और परिग्रह का त्याग करना अर्थात् पाँचों महाव्रतों का पालन करना।

(viii) देवगति में चारों संज्ञाओं की अल्पबहुत्व बताइए।

उ. देवगति में सबसे कम आहार संज्ञा वाले, उनसे भय, मैथुन और परिग्रह संज्ञा वाले क्रमशः संख्यातगुणा।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3 = (24)

(i) शुद्धि की परिभाषा लिखकर इसके भेदों को समझाइए।

उ. विकृत श्रद्धा के निराकरण के प्रयत्न को शुद्धि कहते हैं।
मन शुद्धि- मन से वीतराग देव व सगुरु का स्मरण, ध्यान और गुणगान करें, सरागी देव का नहीं।
वचनशुद्धि- वाणी से वीतराग देव व सगुरु का गुणगान करें, अन्य सरागी देव का नहीं।
काय शुद्धि- काय से वीतराग व सगुरु को वंदन नमस्कार करें, अन्य सरागी देव को नहीं।

(ii) जीव संयत है, असंयत है, संयतासंयत है। इसकी अल्पबहुत्व समझाइए।

उ. समुच्चय जीवों में सबसे थोड़े संयत, उनसे संयतासंयत असंख्यात गुणा, उनसे असंयत अनन्त गुणा। तिर्यंच पंचेन्द्रिय में सबसे थोड़े संयतासंयत, उनसे असंयत असंख्यात गुणा और मनुष्य में सबसे थोड़े संयत उनसे संयतासंयत संख्यात गुणा उनसे असंयत असंख्यात गुणा।

(iii) औदारिक शरीर की प्रथम दो परिभाषा लिखिए।

उ. जो रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि आदि स्थूल पुद्गलों से बना हो, उसे औदारिक शरीर कहते हैं।
जो शरीर उदार अर्थात् प्रधान हो एवं स्थूल पुद्गलों वाला हो, उसे औदारिक शरीर कहते हैं।

(iv) पुद्गलास्तिकाय के भेद समझाइए।

उ. 1. द्रव्य से- अनन्त द्रव्य 2. क्षेत्र से-सम्पूर्ण लोक प्रमाण, 3. काल से- आदि अन्त रहित 4. भाव से- वर्ण, गंध, रस, स्पर्श युक्त, रूपी, अजीव, शाश्वत, लोक व्यापी, संख्यात-असंख्यात और अनन्त प्रदेशी तथा 5. गुण से- पूरण गलन विध्वंसन गुण।

(v) चारित्र किसे कहते हैं? इसके भेदों के नाम भी लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई एक परिभाषा मान्य है-
आत्मा का विभाव से स्वभाव की ओर गति करना 'चारित्र' है।
जिसके द्वारा मोक्ष प्राप्त किया जा सके, उसे 'चारित्र' कहते हैं।
सभी पाप वृत्तियों के त्याग को भी 'चारित्र' कहते हैं।
चारित्र पाँच होते हैं-1. सामायिक चारित्र, 2. छेदोपस्थापनीय चारित्र, 3. परिहार विशुद्धि चारित्र, 4. सूक्ष्म सम्पराय चारित्र और 5. यथाख्यात चारित्र।

(vi) दस संज्ञाएँ कौन-कौन से कर्म से उत्पन्न होती हैं ?

उ. ज्ञानावरणीय दर्शनावरणीय कर्म के क्षयोपशम से लोक और ओघ संज्ञा, वेदनीय कर्म के उदय से आहार संज्ञा और शेष सात संज्ञा मोहनीय कर्म में उदय से होती हैं।

(vii) पुण्य के कितने भेद होते हैं ? नाम लिखिए।

उ. 1. अन्न पुण्य 2. पान पुण्य 3. लयन पुण्य 4. शयन पुण्य 5. वस्त्र पुण्य
6. मन पुण्य 7. वचन पुण्य 8. काय पुण्य 9. नमस्कार पुण्य।

(viii) पडिवाई किसे कहते हैं?

— जिन जीवों ने एक बार सम्यक्त्व प्राप्त कर लिया है, किन्तु सम्यक्त्व का वमन कर देने से वर्तमान में मिथ्यात्व दशा में हैं, वे 'पडिवाई' कहलाते हैं।